हम और हमारा समाज

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मनुष्यों के समूह को समाज और पशुओं के समूह को समज कहते हैं। केवल एक मात्रा का अन्तर है। प्रत्येक व्यक्ति इसी समाज में रहता है। प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, मन्त्री, नेता, अभिनेता, अधिकारी सभी प्राणी इसी समाज में रहते हैं। समाज सबको एक पहचान देता है। उसी के अनुरूप हम नाम जाति धारण करते है। हम्ही से समाज बनता है। हम समाज को कैसे अच्छा वातावरण प्रदान करें, जिससे समाज में समरसता बनी रहे और परस्पर सभी प्रेम पूर्वक निवास करें। मनुष्य और पशु में बुद्धि का अन्तर है। इन्द्रियां दोनों में हैं। केवल बुद्धि और विवेक ही मानव और पशु में अन्तर करता है। कबीरदासजी ने लिखा है–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।।

समाज के हर व्यक्ति को यह स्वीकार करना चाहिये की जैसे हमे सुख–दुःख प्रिय और अप्रिय है, वैसे ही अन्य प्राणियों को भी है। हेय, ज्ञेय और उपादेय ये तीनों समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बुराईयों को छोड़ना, अच्छाईयों को जानना और समाज में उपादेयता के आधार पर उसका वितरण करना अच्छे मानव का कार्य है। समाज कंटक कौन होते हैं? जो समाज को दुःख देते हैं। वे समाज कंटक होते हैं। आतंकवादी कार्यवाही करना, बुरे ईरादे से समाज में विष फैलाना आदि कुछ ऐसे कार्य हो जो समाज कंटक लोग करते हैं। समाज में सभी को कुछ न कुछ उत्तरदायित्व सौंपा है, उस उत्तरदायित्व को पूर्ण करना हम सब का कार्य है। किसान, अध्यापक, अधिकारी, मन्त्री सभी को अपना कार्य करना चाहिए। देवऋण, पितृऋण, गुरुऋण और समाजऋण समाज व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए बनाये गये थे। मानव को अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए इसे पुरा करने का प्रयास करना चाहिए। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रम मानव के जीवन–यापन के लिए निर्मित किये गये थे। इसी के अनुसार जीवन–यापन करते हुए हमारे पूर्वजों ने एक सुदृढ़ समाज व्यवस्था प्रदान की है। इन्हीं सब कारणों से हमारे देश की परम्पराओं को विश्व के लोग आदर

की दृष्टि से देखते हैं। समाज में आजकल कुप्रवृत्तियां बढ़ रही हैं। बलात्कार, अत्याचार, भ्रष्टाचार सामाजिक नग्नता आदि के कारण सामाजिक परम्पराएं टूट रही है। मानव को मानव से बांटा जा रहा है। यह बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है। हमारे पूर्वजों ने सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए सामाजिक व्यवस्था के नियम बनाये थे। इन नियमों का पालन करते हुए हम और हमारा समाज आगे बढ़ सकता हैं। समाज की प्राथमिक इकाई परिवार होता है, तथा इसी परिवार में सामाजिक करण की प्रक्रिया या सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के तहत उसका विकास होता है। इस विकास प्रक्रिया में दो चीजे महत्त्वपूर्ण आधार रखती है– व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, व्यक्ति की आर्थिक स्थिति। सामाजिक स्थिति में व्यक्ति का पद, रोजगार, सामाजिक निर्णय प्रक्रिया में हिस्सा, व्यक्ति की जाति, धर्म आदि तथा आर्थिक स्थिति में व्यक्ति की आर्थिक साधनों तक पहुंच, उसकी उपलब्धता तथा सम्पति तथा आर्थिक साधनों की सुनिश्चितता को सम्मिलित किया जाता है। कई अवसरों पर यह देखनों को आता है कि आर्थिक स्थिति का सशक्त होना, सामाजिक स्थिति को भी सशक्त कर देता है, परन्तु कुछ जगहों में यह प्रभाव नगण्य नजर आता है, जैसे कि एक अनुसूचित जाति का व्यक्ति चाहे कितना भी साधन सम्पन्न और आर्थिक स्थिति से सशक्त हो, परन्तु समाज में उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। सांस्कृतिक, आर्थिक एंव सामाजिक परिदृश्यों में परिवर्तन आया, विशेषकर आर्थिक परिदृश्य में। बदलाव की बयार में आमजन की परिस्थितियों में भी परिवर्तन हुआ। अच्छी चिकित्सकीय सेवा, खाद्यान्न उपलब्धता, आर्थिक सुदृढ़ीकरण ने जीवन प्रत्याशा को बढ़ा दिया। समाज सेवा की सबसे अधिक जरूरत वरिष्ठ नागरिक अर्थात् वृद्धों को होती है। वृद्धावस्था को मानव जीवन की चौथी अवस्था कहा गया है। जिसमें व्यक्ति आगे देखना यानी भविष्य के सुखद सपने बुनना बंद कर देता है। भावात्मक दृष्टि से भले ही बुजुर्ग, सम्मान, श्रद्धा और आस्था के पात्र माने जाते हो लेकिन व्यावहारिक धरातल पर इन वरिष्ठ नागरिकों को अनेक तरह से कष्टों और परेशानियों से गुजरना पड़ता है। अभी तक वृद्धावस्था, व्यक्तिगत या पारिवारिक समस्या मानी जाती थी लेकिन दुनियाभर में वृद्धजनों की संख्या में हो रही वृद्धि के कारण उनकी देखभाल अब परिवार के साथ–साथ समाज और शासन की भी जिम्मेदारी बनती जा रही है। वृद्धजनों की संख्या बढ़ने के अलावा इस मुद्दे से जुड़े और ऐसे

अनेक पहलू हैं, जो सरकार और स्वंयसेवी संगठनों के लिए चुनौती पेश कर रहे हैं। समाज सेवा का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। समाज के उत्थान और उन्नति के लिए जो कुछ भी प्रयास किये जाते हैं वह सब समाज सेवा में गिने जाते हैं।

समाज सेवा करना सभी मनुष्यों का नैतिक उत्तरदायित्व है। अपना नैतिक कर्त्तव्य समझते हुए मानव को यह कार्य करना चाहिए। हर कार्य के लिए सरकार की तरफ दृष्टि नहीं लगानी चाहिए। गांव के छोटे–मोटे कार्यों को गांवों के लोग ही संगठन बनाकर यदि पूरा कर लें तो इससे गांव की उन्नति होगी, समाज की उन्नति होगी और राष्ट्र की उन्नति होगी। समाज में छोटे–बड़े, ऊंच–नीच का भेद–भाव भूलकर समानता के आधार पर सबके साथ व्यवहार होना चाहिए।

2